जय श्री राम
बजरंग वाणी
भक्ति और कृपा का प्रेरणास्रोत

श्री महिमा

परमपिता , सुन अरज पधारो, अपने हाथ अब दास उबारो।
चरण कमल तोहरे बस जावै, मनवांछित फल तुमसे पावै।।

निर्मल मन कर, अपना कीजै, अनंत काल सुख मोहे दीजै।
तुम हो मोर वीर पतवंता, शरण में ली जो मोहे अनंता।।

राम शरण का दास कहावो, मनवांछित फल तुमते पावो।
जोहि जन तोरा यश गावै, ज्ञान दीप अब मन मे जगावै।।

हे नाथ! तुमको हो समर्पण, मन, तन-धन सब तुमको अर्पण।
बल, बुद्धि, विद्या के स्वामी, कृपा करो हे उर अंतर्यामी।।

तुम बिन आस नहीं अब कोये, शरण तेरी मन दर्शन होये।
राम नाम गावो मन साजो, अन्तर मन में आन विराजो,

बजरंग वाणी की विशेषताएँ

श्री हनुमान जी की कृपा का प्रतीक:

बजरंग वाणी श्री हनुमान जी के आशीर्वाद से लिखी गई है,जो भक्त को अपने प्रभु श्री राम जी से जोड़ने का कार्य करती है। यह वाणी हनुमान जी की उपासना के माध्यम से भक्ति भाव को जागृत करती है।

भक्ति मार्ग का निर्देश:

इस ग्रंथ में भक्ति को सर्वोपरि बताया गया है। भक्त को सिखाया जाता है कि कैसे वह अपने जीवन में प्रभु श्री राम के नाम का सुमिरन कर, माया के बंधनों से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

गुरु महिमा का गुणगानः

बजरंग वाणी में गुरु की महानता को विस्तार से समझाया गया है। इसमें बताया गया है कि गुरु ही वह माध्यम हैं, जो भक्त को सत्य, ज्ञान और आत्मबोध की ओर ले जाते हैं।

कर्म और फल का सिद्धांतः

इस ग्रंथ में यह स्पष्ट किया गया है कि मनुष्य को अपने कर्मों का फल अवश्य मिलता है। जो सत्कर्म करता है, उसे पुण्य की प्राप्ति होती है और जो छल-कपट करता है, वह दुखों में फँस जाता है।

जीवन की नश्वरता का बोधः

बजरंग वाणी में बताया गया है कि यह संसार क्षणभंगुर है, इसलिए झूठी शान, माया, और अहंकार में उलझने के बजाय मनुष्य को प्रभु के चरणों में आत्मसमर्पण करना चाहिए।

गुप्त ज्ञान और आत्मबोधः

इस ग्रंथ में यह स्पष्ट किया गया है कि मनुष्य को अपने कर्मों का फल अवश्य मिलता है। जो सत्कर्म करता है, उसे पुण्य की प्राप्ति होती है और जो छल-कपट करता है, वह दुखों में फँस जाता है।

भक्तों के लिए बजरंग वाणी का महत्व:

बजरंग वाणी भक्तों को प्रेरित करती है कि वे अपने जीवन को ईश्वर की सेवा, सच्चाई, और भक्ति में लगाएँ। यह वाणी आत्मबोध, गुरु महिमा, और प्रभु कृपा का एक अनमोल खजाना है, जो भक्त के हृदय में दिव्य प्रकाश जलाती है।

बजरंग वाणी न केवल एक आध्यात्मिक ग्रंथ है, बल्कि यह **श्री हनुमान जी की** भक्ति से भरपूर एक मार्गदर्शक प्रकाश भी है। यह वाणी भक्त को भक्ति भाव से भरकर श्री राम जी की कृपा प्राप्त करने का अवसर देती है।

यह **श्री हनुमान जी** की असीम कृपा का उपहार है, जो भक्त को ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण और मोक्ष का मार्ग दिखाती है

बजरंग वाणी के श्लोक

1. ब्रह्मांड की सत्ता और पालनहार

सूरज चांद सितारे हर पल, जिस की शै पर चलते हैं।
लाखों तपी तपिशवर योगी, इसके रहम पर पलते हैं।।

यह कर्ता है पालनहारा,सृष्टि सारी पाल रहा।
ऋतु बसंत समुद्र झरने, सब अपने में ढाल रहा।।

निराकार है शक्ति जिसकी, जिसका है विस्तार बड़ा।
आदिकाल से परमपिता यह, दिखता है बेडोल खड़ा।।

गुरु शरण में आकर बंदे, सूक्ष्म इसका भेद समझ ।
जिसकी महिमा गाती सृष्टि, गीता ग्रंथ और वेद समझ।।

पर्दा पल में हट जाएगा, रूह रोशन हो जाएगी।
कहे "बजरंगदास" तेरी भक्ति, प्रभु से मेल कराएगी।।

2. जीवन की नश्वरता

चंद सांसों का जीवन बंदे, माया में गलतान फिरें।
पता है सब कुछ मिट जाएगा, फिर क्यों झूठी शान करें।।

क्षणभंगुर ये माया बंदे, तू जिसका रहता सदा अधीन ।
एक दिन ऐसा आ जाएगा, जब हो जाएगा सब कुछ क्षीण ।।

राम नाम का काज ना जाने, क्या जीवन भरमाया है।
सच का सारा भेद अनोखा, गुरु शरण में पाया है।।

जो दाता है देने वाला, इसकी तू पहचान तो कर ।
राम नाम के भजन से अपनी, मीठी तू जुबान तो कर ।।

सच्चा तेरा कर्म ही बंदे, पुण्य तेरा बढ़ाएगा।
कहे "बजरंगदास" कपि तेरा,राम से मेल कराएगा।।

3. सच्ची भक्ति और गुरु का मार्ग

भक्त नहीं जो पल में तोला, पल में माशा हो जाए।
भक्त नहीं जो आस को तज के, घोर निराशा को पाए ।।

भक्त नहीं जो प्रभु करनी पर, पल-पल खड़े सवाल करे
भक्त नहीं जो कृपा को भूले, मन सदा मलाल भरे ।।

भक्त कभी न मन से डोले, गुरु पर सदा विश्वास करे
भक्त न दुनियादारी जानें, सदा गुरु की आस करे

भक्ति उसके बस की नहीं है, जो गुरु वचन में जिए ना
भक्ति उसके बस में नहीं जो, ज्ञान प्याला पिए ना

भक्ति उसके बस की नहीं जो,प्रभु से लगाएं प्रीत नहीं।
भक्ति उसके बस में नहीं जो,सीखे गुरु की रीत नहीं ।।

युगों-युगों से भक्तों की,वेदों ने महिमा गाई है।
कहे “बजरंगदास”,प्रभु भक्ति,गुरु ने ही समझाई है ।।

५. अंतिम समय का बोध

आखिर समय वो आ जाएगा, जब श्वास नहीं आ पाएगा।
अंत समय हिसाब जो होगा,फिर रोएगा, कुर्लाएगा।।

कर्म तेरे जो साथ है जाने,उसका तुझे ख्याल नहीं।
पाप कमाए छल-कपट से,तुझे कभी भी मलाल नहीं ।।

बही खाता है खाली कर्म से,पुण्य कोई कमाया ना।
हर घर में है राम ही बसता,ख्याल कभी भी आया ना ।।

गुरु शरण ही विधि है प्राणी,शरण शीश झुकाए जा।
कहे बजरंगदास अहम तज के,तू गुरु को अपने रिझाए जा।।

५. गुरु की महिमा

गुरु शरण में झुक कर तेरा,जन्म सफ़ल हो जाएगा।
दुविधा मन से मिट जाएगी,भाग्य तेरा खुल जाएगा।।

पल-पल मन में भाव जगा के,गीत गुरु के गाएगा।
माया से मन तज कर अपना,गुरु के दर्शन पाएगा।।

गुरु है तेरा सखा निराला,राम से मेल कराएगा।
गुरु शरण में आकर तेरा,मन निर्मल हो जाएगा।।

सच्ची गुरु संग प्रीत लगा ले,ब्रह्म ज्ञान का भेद समझ।
कहे “बजरंग” यह भेद सुनाते,गीता, ग्रंथ और वेद समझ ।।

6. आत्मज्ञान और दिव्य दृष्टि

यही सब करतब काम न तेरे, तेरा खेल अनोखा है।
इन आँखों से नजर जो आए,क्षणभंगुर यह धोखा है।।

सरोवर पास है और हर पल, पर नजर कुछ आए ना।
तक रोशन हुए नयन ना,ज्ञान मोती चुग पाए ना ।।

कर्म का यह खेल है सारा, खेल समझ में आए ना।
गुत्थी ज्ञान की कभी ना सुलझे,जब तक गुरु, सुलझाए ना ।।

आखिर सहाई गुरु ही होगा, सार ब्रह्म का बतलाएगा।
कहे बजरंगदास, सुन ले प्राणी, जीवन मुक्त पाएगा।।

7.नौ द्वार और गुप्त ज्ञान

नौ द्वारे हैं दृष्टिमान,और दसवां गुप्त द्वारा है।
गुप्त द्वार में ही बसा है,तेरा राम न्यारा है।।

आसमान में देख जरा तू, सूरज चाँद सितारे हैं।
धरती, अग्नि, पानी तेरे,भीतर देख उतारे हैं।।

बीच में वायु, जीव, आकाश है, इनको कहते हैं नौ द्वार ।
ज्ञान चक्षु से देख लो प्राणी,खुल जाएगा दसवां द्वार ।।

गुरु ही तेरा ज्ञान सरोवर,खोल दिखाएगा भगवान ।
बजरंगदास, ऐ प्राणी,गुरु का कर ले पल-पल ध्यान।।

(श्री बजरंग दास जी)

श्री प्रार्थना

हे समरथ! परमात्मा, तू सबका आधार,
कण-कण में तू बस रहा, तू शक्ति अपार ।।

तेरा सकल पसारा है, सृष्टि से भी पार,
तेरी शान निराली है, महिमा अपरंपार।।

तू राजा अधिराज है, सबका पालनहार,
आदि तू ही है अंत तू, दीन-दुखी का तार।।

हर पल तेरा आसरा, सतगुरु तेरी कृपा अपार,
चरणों में क्षमा याचना, आया तेरे द्वार।

भला करो संसार का, दुखभंजन निराकार,
श्वास-श्वास सिमरन करूं, मेरे प्रभु सुख सार।

॥ जय श्री राम ॥